aglasem.com

FOR MP CPCT EXAM PREPARATION

MP CPCT 2017 Question Paper · Hindi Typing

EXAM	YEAR	TYPE	SUBJECT	DATE
MP CPCT	2017	Question Paper	Hindi Typing	20 May 2017

SHIFT
Shift 1

Computer Proficiency Certification Test

Notations :

1.Options shown in green color and with ✔ icon are correct.

2.Options shown in red color and with ✖ icon are incorrect.

Question Paper Name:	Remington GAIL 20th May 2017 shift 1
Subject Name:	Remington GAIL
Creation Date:	2017-05-20 13:13:17
Duration:	25
Calculator:	None
Magnifying Glass Required?:	No
Ruler Required?:	No
Eraser Required?:	No
Scratch Pad Required?:	No
Rough Sketch/Notepad Required?:	No
Protractor Required?:	No

Mock

Group Number :	1
Group Id :	58322491
Group Maximum Duration :	10
Group Minimum Duration :	10
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	1
Mandatory Break time:	Yes
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	583224143
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	583224143
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 1 Question Id : 5832241073 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes

बहुत समय पहले की बात है हिमालय के जंगलो में एक बहुत ताकतवर शेर रहता था एक दिन उसने बारासिंघे का शिकार किया और खाने के बाद अपनी गुफा को लौटने लगा अभी उसने चलना शुरू ही किया था कि एक सियार उसके सामने दंडवत करता हुआ उसके गुणगान करने लगा।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Non Standard
Keyboard Layout: Remington

Actual

Group Number :	2
Group Id :	58322492
Group Maximum Duration :	15
Group Minimum Duration :	15
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	0
Mandatory Break time:	No
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	583224144
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	583224144
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 2 Question Id : 5832241074 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes

इतिहास गवाह है कि विश्व के वही देश संपन्न हो पाए हैं जिनके नागरिकों ने राष्ट्र धर्म को अपन व्यक्तिगत हितों व मतांतरों से सर्वोपरि रखा। आज मनुष्य भले ही आदिम युग से निकल कर आधुनिक युग में आ चुका है लेकिन अपनी आदिमकालिन से चली आ रही बुरी आदतों को नहीं छोड पाया है। इन आदतों ने कालांतर में और भी विकराल रूप धारण कर लिया है। मनुष्य ने अपने उन्नत, ज्ञान व तकनीक का उपयोग रचनात्मक कामों में कम एवं विध्वंसनात्मक कामों में अधिक किया है। आज जो भी आदमी समाज का अगुता बनता है उसकी प्राथमिकता स्वहित, स्वपरिवार हित के दायरे से आगे नही बढ पाती। यह ही नहीं, अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए ऐसे अगुवा देश को क्षेत्रवाद, अलगाववाद और भाषावाद के दावानल में झोंक देते हैं। आज ऐसी ही कई समस्याओं के कारण दिनोंदिन नए राज्यों के गठन के लिए मांग उठती हैं जो कि हिंसक आंदोलनो का रूप लेती जा रही है। देश का कोई कोना ऐसा नहीं है जहां इस तरह की मांग नहीं उठ रही हो। लेकिन इसमें सबसे दिलचस्प बात यही है कि इन आंदोलनों से समाज के आम आदमी का कोई सरोकार नही क्योंकि वह बेहतर तरीके से इनके परिणामों से वाकिफ है। संविधान में एकल नागरिकता, एकल न्यायपालिका, शक्तिशाली केन्द्र एवं अखिल भारतीय सेवा की व्यवस्था की गई है ताकि क्षेत्रवाद या उन्नत रूप में राज्यवाद का ज्वार न फूटे। लेकिन स्थानीय नेताओं की स्वार्थपरक राजनीति ने राज्यवाद को बढावा दिया है। अखिल भारतीय सेवा का अधिकारी जिला स्तर के विकास एवं केन्द्र तथा राज्य प्रशासन की विकासपरक नीतियों को लागू करवाने के लिए जिम्मेदार होता है। पंचायतीराज की संकल्पना इस देश की सबसे दूरस्थ इकाई गावों के विकास के लिए बनाई गई है। ऐसे में जब संवैधानिक ढांचे की पहुंच निचले स्तर तक है तो फिर विकास क्यों नही होता। कहा जाता है कि छोटे राज्य ही विकास का आधुनिक प्रतिमान हैं तो पूर्वोत्तर के उन छोटे और मझौले राज्यों के विकास के बारे में काई क्यों नही सोचता। यह तब है जब उनके पास प्राकृतिक संसाधनों की कोई कमी भी नहीं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण नए गठित राज्य हैं जो स्वयं अपनी कहानी बयान कर रहे हैं तथा जिन राज्यों से इन्हें अलग किया गया उनकी भी स्थति बद से बदतर हो गयी। आज नए राज्यों के बनने के पक्ष में पूर्व में बने कुछ राज्यों की बढी हुई जी.डी.पी यानि सकल घरेलू उत्पाद का हवाला दिया जा रहा है। पर वास्तविकता देखी जाए तो यह केवल अर्थशास्त्रियों के कागजों का गणित मात्र है। विकास संयुक्तता में है और यदि बंटवारे का ही नाम विकास है तो वह दिन दूर नहीं जब बंटवारे के लिए कुछ नहीं बचेगा और विकास शब्द स्वयं अपनी सार्थकता खोज रहा होगा।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes

Evaluation Mode: Non Standard

Keyboard Layout: Remington